उत्पत्ति

विश्व एवं मनुष्य की रचना का वर्णन

१ परमेश्वर ने आरम्भ में आकाश और पृथ्वी
को रचा*। २ पृथ्वी आकार-रहित और
सुनसान थी। महासागर के ऊपर अन्धकार था।
जल की सतह पर परमेश्वर का आत्मा **
मंडराता था।

३ परमेश्वर ने कहा, 'प्रकाश हो', और
प्रकाश हो गया। ४ परमेश्वर ने देखा कि
प्रकाश अच्छा है। परमेश्वर ने प्रकाश को
अन्धकार से अलग किया। ५ परमेश्वर ने
प्रकाश को 'दिन' तथा अन्धकार को 'रात' नाम
दिया। सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ। इस
प्रकार पहला दिन बीत गया।

६ परमेश्वर ने कहा, 'जल के मध्य मेहराब†
हो, और वह जल को जल से अलग करे।'
७ परमेश्वर ने मेहराब बनाया, तथा मेहराब
के ऊपर के जल को, उसके नीचे के जल से
अलग किया। ऐसा ही हुआ। ८ परमेश्वर ने
मेहराब को 'आकाश' नाम दिया। सन्ध्या हुई,
फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन बीत
गया।

९ परमेश्वर ने कहा, 'आकाश के नीचे का
जल एक स्थान में एकत्र हो, और सूखी भूमि
दिखाई दे।' ऐसा ही हुआ। १० परमेश्वर ने
सूखी भूमि को 'पृथ्वी', तथा एकत्रित जल को
'समुद्र' नाम दिया। परमेश्वर ने देखा कि वे
अच्छे हैं। ११ तब परमेश्वर ने भूमि को आज्ञा
दी कि वह वनस्पति, बीजधारी पौधे और
फलदायक वृक्ष, जिनके फलों में बीज हों, उनकी
जाति के अनुसार उगाए। ऐसा ही हुआ।
१२ भूमि ने वनस्पति, जाति-जाति के बीज-
धारी पौधे, फलदायक वृक्ष, जिनके फलों में बीज
थे, उनकी जाति के अनुसार उगाए। परमेश्वर
ने देखा कि वे अच्छे हैं। १३ सन्ध्या हुई, फिर
सबेरा हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन बीत
गया।

१४ परमेश्वर ने कहा, 'दिन को रात से
अलग करने के लिए आकाश के मेहराब में
ज्योति-पिण्ड हों। वे ऋतु, दिन और वर्ष के
चिह्न बनें। १५ पृथ्वी पर प्रकाश करने के
लिए आकाश के मेहराब में ज्योति-पिण्ड हों।'
ऐसा ही हुआ। १६ परमेश्वर ने दो विशाल
ज्योति-पिण्ड बनाए: अधिक शक्तिवान ज्योति-
पिण्ड को दिन का शासक, और कम शक्तिवान
ज्योति-पिण्ड को रात का शासक बनाया।
उसने तारे भी बनाए। १७ परमेश्वर ने उन्हें
आकाश के मेहराब में स्थित किया कि वे
पृथ्वी को प्रकाशित करें, १८ दिन और रात
पर शासन करें और प्रकाश को अन्धकार से
अलग करें। परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे हैं।
१९ सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार
चौथा दिन बीत गया।

२० परमेश्वर ने कहा, 'समुद्र जीवित जल-
चरों के झुण्ड के झुण्ड उत्पन्न करें तथा पक्षी
पृथ्वी पर आकाश के मेहराब में उड़ें।' २१ अतः
परमेश्वर ने बड़े-बड़े जल-जन्तुओं और जीवित
जलचरों को, जो तैरते हैं और जिनसे समुद्र भर
गए हैं, उनकी जाति के अनुसार उत्पन्न किया।

*पहले पद का अनुवाद यह भी हो सकता है, 'जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाना आरंभ किया तब....।'
**अथवा, 'प्रचण्ड पवन' †अथवा, 'गुम्बज'। प्राचीन विश्वास के अनुसार मेहराब अपने ऊपर के जल को नीचे गिरने से रोकता था।

१:१ यूह १:१-३; रोम १:२०; इब्र ११:३; भज १०४ **१:३** २ कुर ४:६ **१:६** २ पत ३:५
१:१४ व्य ४:१९ **१:१५** भज १३६:७ **१:२६-२७** भज ८:६; १ कुर ११:७; कुल ३:१०;

उसने सब पक्षियों को भी उनकी जाति के
अनुसार उत्पन्न किया। परमेश्वर ने देखा कि
वे अच्छे हैं। २२ परमेश्वर ने उन्हें यह आशीष
दी, 'फूलो-फलो, और समुद्रों को भर दो। पक्षी
भी पृथ्वी में असंख्य हो जाएं।' २३ सन्ध्या
हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार पांचवां दिन
बीत गया।

२४ परमेश्वर ने कहा, 'पृथ्वी जीव-जन्तुओं
को उनकी जाति के अनुसार उत्पन्न करे, अर्थात्
प्रत्येक की जाति के अनुसार पालतू पशु, रेंगने
वाले जन्तु, और धरती के वन पशु।' ऐसा ही
हुआ। २५ परमेश्वर ने धरती के वन पशुओं,
पालतू पशुओं और भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं
को उनकी जाति के अनुसार बनाया। परमेश्वर
ने देखा कि वे अच्छे हैं।

२६ परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को
अपने स्वरूप में, अपने सदृश बनाएं, और समुद्र
के जलचरों, आकाश के पक्षियों, पालतू पशुओं,
भूमि पर रेंगने वाले जन्तुओं और समस्त पृथ्वी
पर मनुष्य का अधिकार हो।' २७ अत: पर-
मेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा।
परमेश्वर के स्वरूप में उसने उन्हें नर और
नारी बनाया। २८ परमेश्वर ने उन्हें यह
आशीष दी, 'फूलो-फलो और पृथ्वी को भर दो,
और उसे अपने अधिकार में कर लो। समुद्र
के जलचरों, आकाश के पक्षियों और भूमि के
समस्त गतिवान जीव-जन्तुओं पर तुम्हारा
अधिकार हो।' २९ परमेश्वर ने कहा, 'देखो,
मैंने धरती के प्रत्येक बीजधारी पौधे और
फलदायक वृक्ष, जिनके फलों में बीज हैं, तुम्हें
प्रदान किए हैं। वे तुम्हारा आहार हैं।
३० धरती के पशुओं, आकाश के पक्षियों, भूमि
पर रेंगनेवाले जन्तुओं, प्रत्येक प्राणी को जिसमें
जीवन का श्वास है, मैंने हरित पौधे, आहार
के लिए दिए हैं।' ऐसा ही हुआ। ३१ परमेश्वर
ने अपनी सृष्टि को देखा, और देखो, वह बहुत
अच्छी थी। सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ।
इस प्रकार छठवां दिन बीत गया।

२ यों आकाश और पृथ्वी एवं जो कुछ उनमें है,
इन सबकी रचना पूर्ण हुई। २ जो कार्य
परमेश्वर ने किया था, उसको उसने सातवें दिन
समाप्त किया। उसने उस समस्त कार्य से
जिसे उसने पूरा किया था, सातवें दिन विश्राम
किया। ३ अत: परमेश्वर ने सातवें दिन को
आशीष दी, और उसे पवित्र किया; क्योंकि
परमेश्वर ने उस दिन सृष्टि के समस्त कार्यों से
विश्राम किया था।

४ आकाश और पृथ्वी की रचना का यही
विवरण है।

मनुष्य की उत्पत्ति

प्रभु* परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को
बनाया। ५ पर तब धरती पर कोई पौधा
न था। वनस्पति भूमि में अंकुरित न हुई थी;
क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने पृथ्वी पर वर्षा न की
थी, और भूमि की जोताई करने के लिए मनुष्य
न था।

६ कुहरा** धरती से ऊपर उठा, और उसने
भूमि सींच दी। ७ तब प्रभु परमेश्वर ने
मनुष्य† को भूमि की मिट्टी‡ से गढ़ा तथा उसके
नथुनों में जीवन का श्वास फूंका। मनुष्य एक
जीवित प्राणी बन गया।

अदन का उद्यान

८ प्रभु परमेश्वर ने पूर्व दिशा में अदन में
एक उद्यान लगाया, और वहां मनुष्य को, जिसे
उसने गढ़ा था, नियुक्त किया। ९ प्रभु परमेश्वर
ने समस्त वृक्षों को, जो देखने में सुन्दर थे,
और आहार के लिए उत्तम हैं, भूमि से उगाए।
उसने उद्यान के मध्य में जीवन का वृक्ष तथा
भले-बुरे के ज्ञान का वृक्ष उगाया।

१० एक सरिता उद्यान को सींचने के लिए

*मूल, 'यह्वह' **शब्दश: 'बाढ़', 'जल -प्रवाह'। अथवा, 'धुन्ध' † मूल में, 'आदम' ‡ मूल में, 'अदामाह'

मत १९ : ४ **२ : २** इब्र ४ : ४ **२ : ३** नि २० : ११ **२ : ७** १ कुर १५ : ४५; भज १०४ : २९;
अय्य ३४ : १४ **२ : ९** नीति ३ : १५; प्रक २२ : २.१४ **२ : १०** यहेज ४७ : ११ **२ : १७** रोम ६ : २३

अदन से निकली और वहां विभाजित होकर
चार नदियों में परिवर्तित हो गई। ११ पहली
नदी का नाम पीशोन है। यह वही नदी है जो
अवीला देश के चारों ओर बहती है, जहां सोना
पाया जाता है। १२ उस देश का सोना उत्तम
होता है। वहां मोती और सुलेमानी पत्थर भी
पाए जाते हैं। १३ दूसरी नदी का नाम गीहोन
है। यह वही नदी है जो कूश देश के चारों ओर
बहती है। १४ तीसरी नदी का नाम दजला है,
जो असीरिया देश की पूर्व दिशा में बहती है।
चौथी नदी का नाम फरात है।

१५ प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को लेकर अदन
के उद्यान में नियुक्त किया कि वह उसमें खेती
करे और उसकी रखवाली करे। १६ प्रभु
परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, 'तुम उद्यान
के सब पेड़ों के फल निस्संकोच खा सकते हो,
१७ पर भले-बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल न
खाना; क्योंकि जिस दिन तुम उनका फल
खाओगे, तुम मर जाओगे।'

१८ प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'मनुष्य का
अकेला रहना अच्छा नहीं। मैं उसके उपयुक्त
एक सहायक बनाऊंगा।' १९ अतः प्रभु पर-
मेश्वर ने मिट्टी से पृथ्वी के समस्त पशु और
आकाश के सब पक्षी गढ़े। वह उन्हें मनुष्य
के पास लाया कि देखे, मनुष्य उनका क्या
नाम रखता है। प्रत्येक जीव-जन्तु का वही
नाम होगा, जो मनुष्य उसे देगा।' २० मनुष्य
ने सब पालतू पशुओं, आकाश के पक्षियों और
वन-पशुओं के नाम रखे; किन्तु मनुष्य के लिए
उसके उपयुक्त सहायक नहीं मिला। २१ अतः
प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को गहरी नींद में
सुला दिया। जब वह सो रहा था तब उसकी
पसलियों में से एक पसली निकाली और उस
रिक्त स्थान को मांस से भर दिया। २२ प्रभु
परमेश्वर ने उस पसली से, जिसको उसने
मनुष्य में से निकाला था, स्त्री को बनाया और
उसे मनुष्य के पास लाया। २३ मनुष्य ने कहा,

'अन्ततः यह मेरी ही अस्थियों की अस्थि,
मेरी ही देह की देह है;
यह "नारी" कहलाएगी;
क्योंकि यह नर से निकाली गई है।'

२४ इसलिए पुरुष अपने माता-पिता को
छोड़कर अपनी स्त्री के साथ रहेगा, और वे एक
देह होंगे।

२५ मनुष्य और उसकी स्त्री नग्न थे, पर
वे लज्जित न थे।

मनुष्य का पतन

३ उन सब जीव-जन्तुओं में जिन्हें प्रभु परमेश्वर
ने रचा था, सबसे अधिक धूर्त सांप था। उसने
स्त्री से पूछा, 'क्या सचमुच परमेश्वर ने कहा
है कि तुम उद्यान के किसी भी पेड़ का फल न
खाना?' २ स्त्री ने सांप को उत्तर दिया,
'हम उद्यान के पेड़ों का फल खा सकते हैं।
३ परन्तु परमेश्वर ने कहा है, "उद्यान के मध्य
में लगे पेड़ का फल न खाना, उसे स्पर्श भी नहीं
करना, अन्यथा तुम मर जाओगे।"' ४ सांप
ने स्त्री से कहा, 'तुम नहीं मरोगे। ५ परमेश्वर
जानता है कि जब तुम उसे खाओगे तब तुम्हारी
आंखें खुल जाएंगी। तुम भले और बुरे को
जानकर परमेश्वर के समान बन जाओगे।'
६ स्त्री ने देखा कि आहार के लिए वृक्ष उत्तम है।
वह आंखों को लुभाता है, और बुद्धिमान बनने
के लिए वांछनीय है। अतः उसने उसका फल
तोड़ा, और उस को खाया। उसने अपने पति
को भी दिया, और उसने भी खाया। ७ तब
उनकी आंखें खुल गईं, और उन्हें ज्ञात हुआ कि
वे नग्न हैं। अतः उन्होंने अंजीर के पत्तों को
सी कर लंगोट बनाए।

८ उन्होंने सन्ध्या के समय उद्यान में प्रभु
परमेश्वर की पग-ध्वनि सुनी। मनुष्य और

२ : १९ भज ८ : ६ **२ : २३** उत २९ : १४; २ शम ५ : १; १ कुर ११ : ८; १ तिम २ : १३ **२ : २४** मत
१९ : ५; १ कुर ६ : १६; इफ ५ : ३१ **३ : १** प्रक १२ : ९; यूह ८ : ४४ **३ : ४** २ कुर ११ : ३;
१ तिम २ : १४ **३ : ५** यहेज २८ : २ **३ : ६** रोम ५ : १२-१९ **३ : १४** यश ६५ : २५ **३ : १५** प्रक

उसकी पत्नी ने प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति मे
स्वयं को उद्यान के वृक्षों में छिपा लिया।
९ परन्तु प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को पुकारा,
'तू कहां है?' १० उसने उत्तर दिया, 'मैंने
उद्यान में तेरी पग-ध्वनि सुनी। मैं डर गया,
क्योंकि मैं नंगा था। इसलिए मैंने स्वयं को
छिपा लिया है।' ११ प्रभु परमेश्वर ने पूछा,
'किसने तुझसे कहा कि तू नंगा है? क्या तूने
उस पेड़ का फल खाया है, जिसे न खाने के लिए
मैंने तुझे आज्ञा दी थी?' १२ मनुष्य ने उत्तर
दिया, 'जो स्त्री तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है,
उसने उस पेड़ का फल मुझे दिया, और मैंने
उसे खा लिया।' १३ प्रभु परमेश्वर ने स्त्री से
पूछा, 'यह तूने क्या किया?' स्त्री ने उत्तर दिया,
'सांप ने मुझे बहका दिया और मैंने फल खा
लिया।' १४ प्रभु परमेश्वर ने सांप से कहा,

'तूने यह कार्य किया,
इसलिए तू समस्त पालतू पशुओं तथा सब
वन-पशुओं में शापित है!
तू पेट के बल चलेगा।
तू आजीवन धूल चाटता रहेगा।
१५ मैं तेरे और स्त्री के बीच
तेरे वंश और स्त्री के वंश के मध्य
शत्रुता उत्पन्न करूंगा।
वह तेरा सिर कुचलेगा;
और तू उसकी एड़ी डसेगा।'

१६ प्रभु परमेश्वर ने स्त्री से कहा,

'मैं तेरी प्रसव-पीड़ा को असहनीय
बनाऊंगा।
तू पीड़ा से ही बच्चों को जन्म देगी।
तेरी इच्छाएं पति के लिए होंगी।
वह तुझपर शासन करेगा।'

१७ प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य से कहा,

'तूने अपनी पत्नी की बात सुनी,
और उस पेड़ का फल खाया
जिसके विषय में मैंने आज्ञा दी थी
कि "उसका फल न खाना।"
अतएव तेरे कारण भूमि शापित हुई।
उसकी फसल खाने के लिए तुझे जीवनभर
कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।
१८ वह तेरे लिए कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी।
तू खेत की उपज खाएगा।
१९ तू तब तक अपने पसीने की रोटी खाएगा,
जब तक उस मिट्टी में न मिल जाए जिससे
तू बनाया गया था।
तू तो मिट्टी है,
और मिट्टी में ही मिल जाएगा।'

२० मनुष्य ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा*
रखा, क्योंकि वह समस्त जीवनधारी प्राणियों
की माता बनी। २१ प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य
और उसकी पत्नी को चमड़े के वस्त्र बनाकर
पहिनाए।

२२ प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'देखो, मनुष्य
भले और बुरे को जानकर हममें से एक के
समान बन गया है। अब कहीं ऐसा न हो कि
वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल तोड़
ले, और उसे खाकर अमर हो जाए।' २३ अत:
प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को अदन के उद्यान से
भेज दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे,
जिसमें से उसे बनाया गया था। २४ उसने
मनुष्य को निकाल दिया। उसने जीवन के वृक्ष
की ओर जाने वाले मार्ग की रखवाली करने के
लिए अदन के उद्यान की पूर्व दिशा में करूबों**
तथा चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार
को नियुक्त किया।

काइन और हाबिल का आख्यान

४ आदम ने अपनी पत्नी हव्वा के साथ
सहवास किया। वह गर्भवती हुई और

*इब्रानी शब्द का अर्थ संभवत: 'जीवनदायिनी' है।

** विशिष्ट प्रकार के स्वर्गदूत, जिनके पंख होते हैं; अथवा 'पंखधारी प्राणी'.

१२ : १७; रोम १६ : २० **३ : १७** इब्र ६ : ८; रोम ८ : २० **३ : १९** भज ९० : ३ **३ : २२** प्रक २२ : १४
३ : २४ यहेज २८ : १६ **४ : ४** नि ३४ : १९; इब्र ११ : ४ **४ : ७** उत ३ : १६ **४ : ८** मत २३ : ३५;

THE HOLY BIBLE

Hindi – R.V. Reference

HIND-R.V.-063/10 HIND 121 L/87-88/2M/HB/A006/2
HIND-R.V.-060/10 HIND 124 L/87-88/13M/PL/A006/1

Hard Back : ISBN 81-221-0240-9
Plastic : ISBN 81-221-0241-7

Published by:
The Bible Society of India
206 Mahatma Gandhi Road
Bangalore - 560 001.

Printed at Macmillan India Press, Madras - 600 041